कल्कि KALKI

Know About Kalki

भारत व भारत की संस्कृति विशाल व सबसे प्राचीन है। आइये जाने भारत की वैभवपूर्ण संस्कृति को। यह पृथ्वी है जहाँ तीन–चौथाई जल व शेष एक चौथाई भूमि है। यह भूमि सप्त द्वीपों में विभाजित है जहाँ पृथ्वी के मध्य में स्थित मेरु पर्वत के दक्षिण में स्थित है जम्बू द्वीप। इस जम्बू द्वीप के दक्षिण में स्थित है भारत खण्ड।

अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने। यतो हि कर्मभूरेषा ह्यतोऽन्या भोगभूमयः ॥
अत्र जन्मसहस्त्राणां सहस्त्रैरपि सत्तम। कदाचिल्लभते जन्तुर्मानुष्यं पुण्यसञ्चयात् ॥

श्लोक 22–23 द्वितीय अंश तीसरा अध्याय विष्णु पुराण

जम्बू द्वीप में भारतवर्ष सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि यह कर्मभूमि है इसके अतिरिक्त अन्यान्य देश भोग भूमियाँ हैं। जीव को सहस्त्रों जन्मों के अनन्तर महान् पुण्यों का उदय होने पर ही इस देश में मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। किए गए कर्मों का संचय व क्षय मात्र इसी कर्म भूमि पर सम्भव है, जबकि भोग भूमि पर कर्मों का संचय व क्षय नहीं होता है। जीवात्मा को जन्म किस भूमि पर प्राप्त हो यह उसके कर्मों के आधार पर ही निर्धारित होता है।

अतः सम्प्राप्यते स्वर्गो मुक्तिमस्मात्प्रयान्ति वै। तिर्यक्त्वं नरकं चापि यान्त्यतः पुरुषा मुने ॥
इतः स्वर्गश्च मोक्षश्च मध्यं चान्तश्च गम्यते। न खल्वन्यत्र मर्त्यानां कर्म भूमौ विधीयते ॥

श्लोक 4–5 द्वितीय अंश तीसरा अध्याय विष्णु पुराण

इसी देश में मनुष्य शुभ कर्मों द्वारा स्वर्ग अथवा मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं और यहीं से (पाप कर्मों में प्रवृत्त होने पर) वे नरक अथवा तिर्यग्योनि में पड़ते हैं। यहीं से (कर्मानुसार) स्वर्ग, मोक्ष, अन्तरिक्ष अथवा पाताल आदि लोकों को प्राप्त किया जा सकता है, पृथ्वी में यहाँ के सिवा और कहीं भी मनुष्य के लिये कर्म की विधि नहीं है।

इस भारत भूमि पर आपका स्वागत है, यहाँ, आप जो यह गूढ़ रहस्य जान व पहचान पा रहे हैं।

कर्मभूमि भारत के चार आधार है, सनातन धर्म, पृथ्वी के देवता, वेदों में पारंगत ब्राह्मण, सद्गुरु व भगवान विष्णु। जिनके कारण यहाँ का जनजीवन समृद्ध व खुशहाल रहा, चारों वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र अपने कार्यों में सजग रहे, परिणामस्वरूप यह सोने की चिड़िया बना, जहाँ भूमि में हरियाली राजकोष में सोना चाँदी जवाहरात, परिवार में गऊ, आतिथ्य सत्कार, शिष्टाचार, संयुक्त परिवार प्रणाली के कारण एकता व संस्कारों के कारण, इस भूमि पर दूध की नदियाँ बहती थी। इसी भूमि में मानवता व उसके कल्याण हेतु आयुर्वेद का ज्ञान दिया। ऋषि, मुनि, योगी, ज्ञानी, साधु, तपस्वी व दानी जन यहाँ वास करते थे तथा यह भूमि यति, सती, दानी भक्त और शूरवीर उत्पन्न करती थी। मानव जीवन अनुशासित था, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ, सन्यास प्रत्येक जीवन में उच्च सिद्धांत थे, गुरुकुल प्रणाली यहाँ की पीढ़ी को आत्मनिर्भर व स्वावलंबी बनाती थी। वैदिक परम्परा की इस देवभूमि यज्ञभूमि के आधार भगवान विष्णु के तुल्य गुरु, माता व पिता का स्थान था।

तपस्तप्यन्ति मुनयो जुह्वते चात्र यज्विनः। दानानि चात्र दीयन्ते परलोकार्थमादरात् ॥
पुरुषैर्यज्ञपुरुषो जम्बूद्वीपे सदेज्यते। यज्ञैर्यज्ञमयो विष्णुरन्यद्वीपेषु चान्यथा ॥

श्लोक 20–21 द्वितीय अंश तीसरा अध्याय विष्णु पुराण

इस देश में परलोक के लिये मुनिजन तपस्या करते हैं, याज्ञिकलोग यज्ञानुष्ठान करते हैं और दानीजन आदरपूर्वक दान देते हैं। जम्बू द्वीप में यज्ञमय यज्ञपुरुष भगवान् विष्णु का सदा यज्ञों द्वारा यजन किया जाता है, इसके अतिरिक्त अन्य द्वीपों में उनकी और–और प्रकार से उपासना होती है।

क्या आज की भारत भूमि पर यह है?

नहीं

क्योंकि कलियुग हावी हो चुका है
इसलिए कल्कि की आवश्यकता है।
कल्कि क्या है? कौन है? कहाँ है?

जानिए कल्कि की रहस्यमयी लीला सृष्टि के प्रारम्भ से अन्त तक ....

सृष्टि के आरम्भ में निराकार ऊर्जा ने अपने आप को पुरुष व प्रकृति में विभाजित करा। पुरुष तत्व ने त्रिदेव रचियता परमपिता ब्रह्मा, पालन पोषण करता पंच तत्व के अधिपति पालनकर्ता भगवान विष्णु, संहारकर्ता कल्याणमय शिव के रुप में अपने को प्रकट करा तथा त्रिगुणात्मक प्रकृति तत्व ने सरस्वती, लक्ष्मी व पार्वती के रूप में स्थापित होकर पुरुष तत्व के दायित्व को पूर्ण किया। सृष्टि में किसी भी परिस्थिति में सृजन व संहार का कार्य अवरुद्ध नहीं हुआ। परन्तु निरन्तर सृष्टि में ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती रही जब संरक्षण व संचालन का कार्य बाधित हुआ, पथ विमुख हुआ, जिसके फलस्वरूप पालनकर्ता भगवान विष्णु को धरा पर अवतार लेने पड़े। जब–जब अधर्म बढ़ा, प्रकृति का ह्रास हुआ व ज्ञान का विलोपन हुआ, तब–तब भगवान विष्णु अवतरित हुए। भगवान विष्णु के अनन्त अवतारों में से विशेष 24 अवतारों में से प्रमुख हुए दस अवतार जो दशावतार कहलाए और भगवान कल्कि इन दोनों में ही सर्वशक्ति युक्त अंतिम अवतार है। आईये जाने दशावतार की कथा।

दशावतार

भगवान विष्णु ने सदा समय के लक्षणों के प्रभाव, प्रवाह व तीव्रता के आधार पर अपने अवतारों को शक्ति प्रदान करी। यह शक्ति व ज्ञान की मात्रा 'कला' कहलाई। मनुष्य में 5 से 7 कलाएँ रहती है। इसके ऊपर 8 से 16 कलाएँ अवतारों की रही। भगवान राम 12 कलाओं के साथ धरा पर आए। प्रभु श्री कृष्ण 16 कलाओं के साथ, परन्तु 64 कला युक्त महाविष्णु को कभी भी इससे अधिक कलाओं के साथ धरा पर अवतरण की आवश्यकता नहीं रही, मात्र कल्कि अवतार के अतिरिक्त, जो महाविष्णु का सम्पूर्ण 64 कला युक्त सर्वशक्तिमान अवतार है। परन्तु कला का अर्थ यह नहीं कि कोई अवतार छोटा अथवा बड़ा है।

कल्कि नाम का इस युग में चमत्कार निराला है
कल्कि नाम से आया हुआ अवतार निराला है।
संहार भी हर बार से इस बार निराला है।

कल्कि अवतार जैसा अवतार ना हुआ ना होगा, कल्कि अवतार ना भूतों ना भविष्यति ....
क्योंकि ....
मात्र यही वह अवतार है जो युग परिवर्तन हेतु हो रहा है।
मात्र यही अवतार निष्कलंक अवतार है। भगवान राम ने रावण का संहार स्वयं करा, तथा भगवान कृष्ण ने अधर्मी कौरवों का नाश रथ पर बैठकर अर्जुन से करवाया, परन्तु इस युग में तूफान, बवन्डर, सुनामी आयेंगे, एवं हाईड्रोजन बम फटेंगे बड़े–2 महायुद्ध लड़े जायेंगे। परन्तु कोई यह कहने वाला नहीं रहेगा कि यह प्रभु कल्कि ने किया।
मात्र यही वह अवतार है जो समय के बन्धन में नहीं है क्योंकि अवतार लक्षणों के अनुरुप उनकी तीव्रता के आधार पर ही प्रकट होता है, और यदि वह समय निकल जाए तो फिर अवतार धारण का प्रयोजन अपूर्ण रह जाएगा।
प्रहलाद के नष्ट होने के बाद यदि खम्भ में से नरसिंह प्रकट होते तो क्या अवतार का प्रयोजन पूर्ण होता? ध्रुव के श्वास को रोकने पर सृष्टि रुक गई। ध्रुव व सृष्टि के समापन पर हरि अवतार होता तो क्या प्रयोजन पूर्ण होता? 99 यज्ञों के पश्चात् राजा बलि का 100वाँ यज्ञ पूर्ण होते ही उन्हें इन्द्रासन प्राप्त हो जाता तथा दैवीय व्यवस्था चरमरा जाती। तब वामन अवतार का क्या अभिप्राय होता?जब जैसे लक्षण प्रकट हुए उसी अनुरूप नारायण का अवतार हुआ। ना ही काल के महाकाल, उसके रचयिता भगवान विष्णु समय सीमा में बंधकर गोलोकधाम वापिस गए। भगवान राम उनके अवतार हेतु निर्धारित समय सीमा पूर्ण होने के दीर्घकाल पश्चात् ही वैकुण्ठ गए थे।
उसी प्रकार महाविष्णु का यह सर्वशक्तियुक्त कल्कि अवतार भी समय के आधार पर नहीं, अपितु युग में उत्पन्न परिस्थितियों व लक्षणों के आधार पर हुआ है।
एकमात्र यही वह अवतार है, जिसकी लीला अत्यंत अनोखी अद्भुत और विज्ञान से परे है। परन्तु इतनी सरल व व्यापक है कि कोई भी भगवान कल्कि का भक्त स्वयं इसका अनुभव कर सकता है, इसलिए यह अनुभव लीला के नाम से अनुमोदित है।
प्रत्येक व्यक्ति को स्वप्न होते है यह वैज्ञानिक सत्य है, परन्तु ऐसे स्वप्न जो याद रहे, जो दैवी हस्तक्षेप के कारण हमें मिले जो आगामी किसी घटनाक्रम के प्रति हमें सचेत करें अथवा पूर्व में घटित किसी बात का क्रम हमें दिखाए। जिससे जीवन सुखमय बने, भगवान कल्कि के भक्तों को शक्ति मिले, रास्ता मिले ना ही केवल कलि को टक्कर देने की अपितु अपना जीवन अर्थपूर्ण बनाने की। वह है भगवान श्री कल्कि की चमत्कारी अनुभव लीला। अनुभव स्वप्न, जागृत व वाणी किसी भी रूप में दिख सकते हैं।
प्रत्येक युगावतार में नारायण की सहायता पृथक–पृथक दैवी शक्तियों ने की। रामावतार में भगवान शिव ने 11वां रूद्रावतार

लेकर श्री हनुमान के रूप में भगवान राम के कार्य पूर्ण करें। विश्वकर्मा के अंश नल–नील ने राम सेतू का निर्माण किया। सुग्रीव सूर्य के अंश से आए। कृष्णावतार मे पृथ्वी सत्यभामा के रूप में अवतरित हुई। इन्द्र के अंश से अर्जुन आए। धर्मराज युधिष्ठर व विदुर के रूप में आए। ऋषि मुनि गोप–गोपियाँ बनकर आए। युद्ध भूमि में अर्जुन के ध्वज पर श्री हनुमान बैठे तथा अर्जुन की विजय सुनिश्चित करी। इस युग में भी सभी दैवी शक्तियाँ भगवान श्री कल्कि के कार्य पूर्ण करने हेतु प्रकट हो रही है, व कालांतर में प्रकट होती रहेगी। युगावतार भगवान श्री कल्कि की उपासना, भक्ति, प्रचार व पुकार से समस्त दैवी शक्तियों का संरक्षण व कृपा स्वतः ही प्राप्त हो जाती है।

भगवान कल्कि एवं भगवान शिव

भगवान श्री कल्कि को मन की गति से चलायमान देवदत्त अश्व, दुधारा रत्नसरू तलवार व ज्ञानमयी तोता भगवान शंकर ने प्रदान करे। प्रत्येक युग की भांति नारायण व महेश्वर का अद्भुत सम्बन्ध रहा है। दोनों एक–दूसरे के ईश्वर व पूरक हैं। भगवान श्री कल्कि ने दिव्य शिव स्रोत की रचना की जिसके पठन से शिव कृपा स्वतः ही प्राप्त हो जाती है।

भगवान श्री कल्कि व माँ वैष्णो देवी का सम्बन्ध

कल्कि अवतार में नारायण की संहारिणी शक्ति त्रिकूटवासिनी देवी वैष्णवी रहेगी जो रत्नाकर सागर की पुत्री है तथा रामावतार से ही प्रभु श्री कल्कि को प्राप्त करने हेतु घोर तप कर रही है। रामावतार में भगवान राम के एक पत्नीव्रत व देवी वैष्णवी के अपर्याप्त तप के कारण दोनों का समन्वय नहीं हो सका तब भगवान राम ने देवी वैष्णवी को आश्वस्त किया कि अपने कल्कि अवतार में वह देवी वैष्णवी को संहारिणी शक्ति के रूप में ग्रहण करेंगे। तब तक वह त्रिकूट क्षेत्र में जाकर तप करे तथा जनसाधारण के कष्ट हरे। देवी वैष्णवी का प्रादुर्भाव दुष्टों के संहार हेतु हुआ था देवी महाकाली, महासरस्वती तथा महालक्ष्मी ने अपनी शक्तियाँ दी थी और अब वैष्णवी युगान्त से नारायण श्री कल्कि के लिए तप कर रही है।

कल्कि भक्तों के आदि गुरु श्री हनुमान जी

कल्कि भक्तों के श्री हनुमान ही आदि गुरू हैं जिन्होंने भगवान श्री कल्कि के नाम का उद्घोष किया तथा परचम लहराया। भगवान राम के गोलोकधाम प्रस्थान करते समय विष्णु रूप प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने हनुमान जी से कहा कि हे पवनपुत्र तुमने प्रण किया था कि दीर्घकाल तक धरा पर रहकर मेरी कथा का प्रचार व प्रसार करोगे। सो हे पवनपुत्र कलिकाल में हरि भजन कीर्तन ही मेरी प्राप्ति का सुलभ मार्ग होगा। तब भक्तों को आपके मार्गदर्शन की अति आवश्यकता होगी अतः आप कलियुग के अन्त में होने वाली प्रलय तक धरा पर रहकर मेरी कथा का प्रचार व प्रसार करे। इसलिए त्रेता से कलियुग तक श्री हनुमान भक्तों के सच्चे मार्गदर्शक है आदि गुरू हैं। हनुमान जी के आवेशावतार गुरुवर बालमुकन्द जी को भगवान श्री कृष्ण द्वारा अनुभव में कल्कि नाम प्राप्त हुआ और उन्होंने कल्कि नाम का उद्घोष परतंत्र भारत की दिल्ली की गलियों में किया तथा बंगाल के स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी के अवतार गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी को कल्कि ज्ञानामृत प्रदान किया।

जिस प्रकार प्रकाश का महत्व जानने के लिए अंधकार को जानना, पहचानना व उसका अनुभव करना अनिवार्य है उसी प्रकार कल्कि अवतार को जानने के लिए कलि की विकरालता जानने की आवश्यकता है कि इसकी उत्पत्ति कब हुई, कैसे हुई। जब सृष्टि उत्पन्न हुई ब्रह्मा जी ने पुरुष व नारी मनु शतरुपा प्रकट करे। सप्त ऋषि आदि प्रकट हुए। समय चक्र व काल की रचना हुई। चारों युगों व उनके कुल की रचना हुई। कलियुग व उसके कुल का वर्णन कुछ इस प्रकार रहा। ब्रह्मा जी की पीठ से मलीन पातक अर्थात् अधर्म उत्पन्न हुआ। उसका विवाह मिथ्या से हुआ। इनका दम्भ नामक पुत्र व माया नामक पुत्री हुई। इन भाई बहन के संजोग से लोभ नामक पुत्र व निकृति नामक पुत्री हुई जिनके संजोग से क्रोध व हिंसा का जन्म हुआ और क्रोध व हिंसा से जन्म हुआ कलियुग के अधिपति कलि तथा दुरूक्ति का। कलि व रूक्ति से भय व मृत्यु का जन्म हुआ। मृत्यु ने भय के संजोग से निरय व यातना का जन्म हुआ और इन दोनों के संजोग से हजारों पुत्र जन्मे। इस प्रकार अधर्म युक्त थे परिवार कलि के साम्राज्य में कलियुग में व्याप्त हुआ। कलि बहुत सूक्ष्म है। काम, क्रोध, लोभ आदि के रूप में सब जगह व्यापक है हवा–पानी की भाँति। यह विकराल व अत्यन्त विशाल भी है। भ्रष्टाचार, समाजवाद, आतंकवाद आदि के रूप में विश्व में समाहित है। इसी कारण इस युग का नाम इसके नाम पर पड़ा कलियुग, जिसका अन्त मनुष्य शक्ति के वश में नहीं है। जिसके परिवर्तन हेतु महाविष्णु 64 कलाओं के साथ धरा पर भगवान श्री कल्कि के रूप में अवतरित हुए हैं।

युग	देवता वर्ष	x 360	मानव वर्ष
सतयुग	4800	x 360	1728000
त्रेता	3600	x 360	1216000
द्वापर	2400	x 360	864000
कलियुग	1200	x 360	4320000
चतुर्युगी	12000		

चत्वारि भारते वर्षे युगान्यत्र महामुने।
कृतं त्रेता द्वापरञ्च कलिश्चान्यत्र न क्वचित्॥

श्लोक 19 द्वितीय अंश तीसरा अध्याय विष्णु पुराण

इस भारत वर्ष में ही सत्युग, त्रेता, द्वापर और कलि नामक चार युग हैं, अन्यत्र कहीं नहीं।

चार युगों सतयुग, त्रेता, द्वापर व कलियुग में से सतयुग की आयु सर्वाधिक व कलियुग की आयु सबसे कम होते हुए भी इसकी विकरालता सर्वाधिक है। धर्म जो बैल के रूप में है। सतयुग में उसके चारों पैर सुरक्षित हैं। फिर त्रेता में उसके एक पैर का ह्रास हुआ, द्वापर में दूसरे का तथा कलियुग में तीन चरणों का ह्रास होकर वह मात्र एक पैर पर ही खड़ा है।

कलियुग के मात्र 5090 वर्षों में ही इसके चतुर्थ चरण के सभी लक्षण प्रकट हो चुके हैं। यदि सूक्ष्म दृष्टि से मंथन किया जाए तो अन्तिम चरण के लक्षणों से भी कलियुग आगे निकल चुका है।

जिनका वर्णन व विवरण श्रीमद्भागवत के द्वादश स्कंद के दूसरे अध्याय में स्पष्ट रूप से अंकित है। कलिकाल के चौथे चरण में संसार से धर्म, सत्य, संतोष, पवित्रता आदि का लोप हो जाएगा। संसार में भ्रष्टाचार व्याप्त हो जाएगा जिससे विश्व में व्याप्त सरकारें प्रजा के हित की नीतियाँ नहीं बना पाएंगी। न्यायपालिका से भी व्यक्ति को यथार्थ न्याय नहीं प्राप्त होगा। बढ़ती महत्वाकांक्षाओं के कारण मनुष्य का निरंकुश हो जाएगा। जिस कारण वह प्राकृतिक संतुलन को नष्ट कर देगा। वृक्ष, वनस्पतियों को काटना, वायु का दूषित, जल का प्रदूषित होना जिसके कारण संसार में कभी बाढ़, पाला, अकाल, सूखा, भारी वर्षा, प्रचंड आंधी, भीषण गर्मी (ग्लोबल वार्मिंग), तूफान, सुनामी आदि से जगत में जनसंख्या का ह्रास होने लगेगा, पारिवारिक मूल्य समाप्त होने लगेंगे। अतिथि–सत्कार का विलोपन होने लगेगा। सच्चाई, ईमानदारी के स्थान पर छल कपट को ही व्यवहार कुशलता माना जाएगा। ब्रह्मचर्य, वर्ण आश्रम के अर्थ समाप्त हो जाएंगे। ज्ञान के स्थान पर अत्यधिक वाणी में कुशल व्यक्ति को ही पंडित समझा जाएगा। धान जैसे कि जौ, बाजरा, आदि की खेती सीमित रह जाएगी। इस कारण मनुष्य के शरीर छोटे व रोगों से ग्रस्त हो जाएंगे तथा मनुष्य की औसत आयु 20 से 30 वर्ष रह जाएगी। Government survey के अनुसार देखें तो गर्भपात की संख्या व प्राकृतिक मृत्यु के आंकड़े को जोड़कर विभाजन किया जाए तो यह भी सत्य हो चुका है। गाय तथा गाय के परिवारों को व्यंजन व खानपान के लिए निर्ममता से काटा जाएगा जो सत्य है। गाय को पूजनीय व अमूल्य धन मानकर स्तवन किए जाने वाले भारत में आजादी से अब तक 50 करोड़ से अधिक गाय काटी जा चुकी है। विश्व में गाय की परिस्थिति और भी दयनीय है। जहाँ शाकाहारी गाय को मांस तक खिलाया जाता है जिसके कारण वह मानसिक संतुलन तक खो देती है। विदेशों में इसे Mad cow disease कहते हैं। कलियुग के ये अत्यन्त भयानक चतुर्थ चरण के लक्षण आज उसके पहले चरण में ही मात्र 5,090 वर्षों में प्रकट हो चुके हैं।

पूरे संसार की भोग भूमि पर यह लक्षण व्याप्त हो चुके है, जिसके कारण मानव जीवन के चार आधार धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में से वहां मात्र अर्थ (धन) व काम (वासना) ही रह गए हैं तथा मानवीय मूल्य समाप्त होकर, पशु तुल्य आचरण हो गया है। मात्र भारत की कर्म भूमि पर अभी भी यह चारों व्याप्त हैं, परन्तु कालान्तर में यह भी समाप्त हो जाएंगे, क्योंकि कलियुग का युग अपूर्ण ही रहेगा जब तक कर्मभूमि के सिद्धांत भी भोग भूमि के जैसे ना बन जाए। ऐसा करने में कलि ने ना तो कोई कसर छोड़ी है और ना ही कोई योजना, कलि ने जो यहां पर भारत की धरोहर को नष्ट करने के उपाय करे थे उनका प्रभाव आज आ चुका है।

भारत भी म्लेच्छ स्वरूप बना संसार तो था ही द्रोही
ये धर्म रसा तल चला कि जिसका तुम बि नहीं है कोई

भारत की जड़ सनातन धर्म, वेदवेता ब्राह्मण गौ व भगवान विष्णु है तथा नव पीढ़ी का आधार सदा ही चरित्र, शिक्षा, वेशभूषा व पवित्र खानपान रहे थे, जिसके कारण यह सदा ही सोने की चिड़िया रही।

कलियुग ने सर्वप्रथम तुरकियों, यवनों को भारत भूमि पर भेजा जिससे वह कंगाल हो जाए, और उसके पश्चात् भेजा अपने कट्टर अनुयायी अंग्रेजों को, Thinkers thoughter के रूप में भिक्षुक की तरह, ठीक जैसे कलियुग आया था परीक्षित के राज में, और फिर जैसे कलियुग ने अपना आधिपत्य स्थापित किया उसी प्रकार अंग्रेज भी यहाँ के शासक बन बैठे, भारत वासी दही के धोखे में चूना खा बैठे।

भारत में गुरुकुल व्यवस्था थी, जहां नई पीढ़ी के सुदृढ़ चरित्र का निर्माण होता था, उन्हें सनातन धर्म, आत्मज्ञान के माध्यम से गुरु आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करते थे, जिसके कारण शिष्यों में संयम, संतोष, सहनशीलता, आत्मनिर्भरता, अनुशासन, आदि गुणों से उनका दिव्य चरित्र का निर्माण होता था और जिस राष्ट्र के नागरिकों का चरित्र मजबूत होता है वह राष्ट्र स्वयं भी महान हो जाता है। बच्चों को गुरुकुल में गुरु, माता, पिता का स्थान ईश्वर के समकक्ष बताया जाता था, खानपान को विशेष महत्व दिया जाता था, क्योंकि जैसा आहार वैसा ही विचार, नित्य, गायत्री, संध्या वन्दन, व्यायाम, योग के माध्यम से उन्हें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का समन्वित ज्ञान दिया जाता था जो कि जीवन का आधार बनता था।

भारत में ब्राह्मण का बहुत महत्व था यदि किसी यात्रा पर जाना हो, विवाह हो, गृहप्रवेश हो, शिशु का जन्म हो या फिर मृत्यु ही क्यों ना हो ब्राह्मण से ही पूछ कर हर कार्य किया जाता था। जो पंचांग देखकर इन मुर्हुतों के ज्ञान के साथ–साथ ये भी बता देते थे कि वर्षा कब होगी, ग्रहण कब लगेगा और उसके कहने पर हजारों लाखों भारतीय गंगा, कावेरी व कुंभ आदि पहुँच जाते थे।

ब्राह्मण उस समय वेदज्ञ धर्मनिष्ठ व आत्मज्ञानी थे वे जीविकोपार्जन के लिए ज्ञान प्रदान नहीं करते थे अपितु समाज के चरित्र निर्माण के लिए करते थे।

भारतीय गाय को पशु नहीं अपनी मां के समान मानते थे और इनके दुग्ध पदार्थ के साथ–साथ गोबर व मूत्र भी प्रसाद रुप व औषधि रुप में ग्रहण करते थे तथा उसे अमृत मानते थे जिससे यह मानसिक रुप से, शारीरिक रूप से और शक्तिशाली बनते थे। प्रत्येक परिवार में कम से कम एक गाय का पालन अनिवार्य था जिसके कारण कोई परिवार भूखा नहीं रहता था और इसीलिए उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि होती थी तथा भारत में दूध की नदियाँ बहती थी।

भारत के प्रत्येक परिवार में संयुक्त परिवार प्रणाली थी जिसके कारण यहां एकता थी, यहां संस्कृत भाषा व मातृभाषा के प्रयोग में गौरव की अनुभूति होती थी, स्वाध्याय, वषट्कार, स्वधा व स्वाहा का स्वर प्रत्येक घर में गूंजता था। प्रत्येक परिवार में यज्ञ हवन, देव पूजा, अतिथि सत्कार, श्राद्ध व तर्पण होते थे। योग व आयुर्वेद के कारण यहाँ के निवासी स्वस्थ रहते थे, तथा तिथि ज्ञान, ऋतु ज्ञान, पर्व ज्ञान, शुचि व अशुचि का ज्ञान, वर्णाश्रम का पालन आदि भारतीय संस्कृति के वैभव की गाथा गाते थे। इसी कारण भारतीय संस्कार, संस्कृति, सभ्यता से सजी कर्मभूमि भारत भूमि में जन्म लेने के लिए स्वयं स्वर्ग के देवी–देवता भी आतुर रहते थे।

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥
कर्माण्यसङ्कल्पिततत्फलानि संन्यस्य विष्णौ परमात्मभूते।
अवाप्य तां कर्ममहीमनन्ते तस्मिँल्लयं ये त्वमलाः प्रयान्ति॥
जानीम नैतत् क्व वयं विलीने स्वर्गप्रदे कर्मणि देहबन्धम्।
प्राप्स्याम धन्याः खलु ते मनुष्या ये भारते नेन्द्रियविप्रहीनाः॥

श्लोक 24,25,26 द्वितीय अंश तीसरा अध्याय विष्णु पुराण

देव गण भी निरन्तर यही गान करते हैं कि 'जिन्होंने स्वर्ग और अपवर्ग के मार्गभूत भारत वर्ष में जन्म लिया है वे पुरुष हम देवताओं की अपेक्षा भी अधिक धन्य (बड़भागी) हैं।। जो लोग इस कर्मभूमि में जन्म लेकर अपने फलाकांक्षा से रहित कर्मों को परमात्म–स्वरूप श्रीविष्णु भगवान् को अर्पण करने से निर्मल (पाप पुण्य से रहित) होकर उन अनन्त में ही लीन हो जाते हैं (वे धन्य हैं!)।

'पता नहीं, अपने स्वर्गप्रदकर्मों का क्षय होनेपर हम कहाँ जन्म ग्रहण करेंगे! धन्य तो वे ही मनुष्य हैं जो भारत भूमि में उत्पन्न होकर इन्द्रियों की शक्ति से हीन नहीं हुए हैं।

भारत की यह गौरव पूर्ण गाथा –

''थी''

कलियुग के प्रहार के कारण यह

''नहीं रही''

क्योंकि गुरुकुल के स्थान पर खुले अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने वाले विश्वविद्यालय, जहाँ से शिक्षा पूर्ण कर विद्यार्थी जब आये तब उनके अपने कोई संस्कार नहीं रहे, वेशभूषा बदल गई, केवल विज्ञान के आधार पर तर्कपूर्ण शिक्षा रह गई, चरित्र का नाश हो गया, खानपान मांसाहार व मदिरा में लिप्तप्रायः हो गया, संस्कृत भाषा गैर जरूरी व मातृभाषा हीनता का सूचक हो गई, गुरु का महत्व शून्य हो गया, माता–पिता ईश्वर नहीं मात्र गाईड करने वाले गार्जन रह गये, टीवी, रेडियो, इंटरनेट, कम्प्यूटर अश्लील किताबों ने चरित्र नष्ट कर नई पीढ़ी के कोमल पौधे को सदा के लिए मोड़ दिया। जंक फूड, कई–कई दिनों के पैकेज फूड, मांस, आदि ने शरीरों को आज खोखला कर दिया व एक समय संतोष व संयम वाली पीढ़ी Life Style Disease से ग्रसित हो गई और कम से कम परिश्रम व पुरुषार्थ करके ज्यादा व अधिक पाने की वासना बढ़कर अनियंत्रित हो गई। उनके जीवन का उद्देश्य सिर्फ अर्थ (धन) व काम ही रह गया। गऊ ग्रास देना बंद हो गया, उन्हें कूड़ा खाना पड़ा, व विदेशों में मांस भी, ब्राह्मण आत्मज्ञान रहित हो गए, उनका आदर व महत्व समाप्त हो गया, उन्हें तथा उनके परिवारों को जीविका हेतू नौकरी मिलना बन्द हो गया क्योंकि अंग्रेजी भाषा धनोपार्जन का साधन हो गई।

भारत के परिवारों में जीवन शैली पाश्चात्य के रंग में रंग गई। Club, Gym, Disco युवा पीढ़ी का आधार हो गए, ऐलोपैथी पर निर्भरता के कारण, शरीर कमजोर व बीमारी से घिर गए। धर्म व मोक्ष का महत्व खत्म हो गया। फलस्वरूप आज भारत के मनुष्यों के संस्कार भोग भूमि के मनुष्यों की तरह हो गए।

जो महान संस्कृति थी आज वही संस्कृति तुच्छ बन कर रह गयी है। भारतवासी मात्र नाम से ही भारतीय हैं, उनका रक्त पाश्चात्य हो चुका है। पाश्चात्य संस्कृति, संस्कार, शिक्षा व शिक्षक का रंग ऐसा चढ़ा है कि आज हम अपने संस्कारों में हीनता का अनुभव करने लगे हैं। एक बालक नरेन्द्र पर भी इस शिक्षा का असर ऐसा हुआ कि वह भी विलायती शिक्षा प्राप्त कर के भारत की हर मान्यता को रूढ़िवादी व तर्क से परे मानकर यहाँ की मूल्यताओं का उपहास करने लगा तब उसे स्वामी रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरू प्राप्त हुए जिन्होंने उनकी आत्मा को झिंझोर कर स्वयं से पहचान कराकर वैसे ही अवगत कराया जिस प्रकार हनुमान जी को उनकी शक्तियों का स्मरण जामवंत जी ने कराया था जिसके फलस्वरूप सन् 1893 में अमेरिका में हुई शिकागो Convention में भारत, भारत के सनानत धर्म की विविधता, विशालता व सम्पूर्णता का ऐसा डंका बजा कि पूरा विश्व सोचने पर विवश हो गया कि वास्तव में भारतीय धर्म व संस्कृति महान व सर्वोच्च है और ऐसा करके वो बालक नरेन्द्र स्वामी विवेकानन्द कहलाए। पद से भटके हुए नरेन्द्र को तो स्वामी रामकृष्ण जैसे गुरु प्राप्त हुए, जिससे पुनः वो अपने भारतीय होने के गौरव को खोज, जान व पहचान पाए परन्तु हमारे पास हमारी भावी पीढ़ी के लिए क्या है? कैसा मार्ग है? कौन सा मार्ग है? उन्हीं रामकृष्ण जी के अवतार गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी की प्रेरणा से सन् 1989 में श्री कल्कि बाल वाटिका की स्थापना हुई जहाँ आज की पीढ़ी को उन्हीं के सिखाए हुए मार्ग के आधार पर खेल–खेल में विभिन्न रोचक गतिविधियों के माध्यम से संस्कारों का रोपण कर भारत, यहाँ के धर्म, संस्कृति व गौरवता का स्मरण करा कर एक आदर्श व्यक्तितव में उभारा जाता है। श्री कल्कि बाल वाटिका का उद्देश्य व संदेश सदा से ही नव पीढ़ी में संस्कार, सत्संग व संकीर्तन के माध्यम से भगवान श्री कल्कि के प्रति भक्ति मार्ग का अनुसरण करते हुए, एक जागरूक व सशक्त व्यक्तित्व में सवारना है।

निरन्तर बढ़ते हुए कलियुग की चालों का प्रभाव अब हमारे सामने हैं।

कलियुग के प्रथम चरण में तब	कलियुग में चतुर्थ चरण में अब
गुरुकुल प्रणाली–आत्मज्ञान द्वारा आत्मशिक्षा, आत्मनिर्भरता, सहनशीलता, संस्कार धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, जीवन के आधार	विश्वविद्यालय – अंग्रेजी शिक्षा, कुसंस्कार, चारित्रिक पतन, अश्लील व अव्यवस्थित वेशभूषा, शास्त्रों व सद्ग्रन्थों के प्रति उदासीनता, टीवी, एफएम, इंटरनेट से चरित्र का सर्वनाश अर्थ, काम, मात्र रह गए। धर्म को नहीं मानना fashion, राम, कृष्ण के जीवन को कलंकित कर इनकी हंसी उड़ाई जाती है। तर्क–वितर्क किया जाता है।
मानव जीवन के चार आश्रम (ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यास) एवं चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र) का पालन करते थे, एवं चार वेद (सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद व अथर्ववेद) की आज्ञा व शिक्षा का पालन करते थे।	आज मानव ना तो किसी आश्रम के प्रति सजग है, न वर्ण मानता है, तथा वेद ज्ञान जीवन शैली से लुप्त हो चुके हैं अपितु इनका पालन यदि कोई करे तो वह रुढ़िवादी (orthodox) माना जाता है।
खानपान – शाकाहारी, व्रत आदि के माध्यम से संतोष, संयम, स्वास्थ्य, आयु में वृद्धि	जंक फूड, मांसाहार, कई दिनों का पैकेज फूड, मिलावटी भोजन जैसा आहार वैसा विचार – बिमारियाँ व खोखला शरीर
व्यायाम, योग ठोस जीवन शैली	क्लब, डिस्को, जिम – जीवन शैली ध्वस्त
आयुर्वेद से स्वस्थ्य जीवन	एलोपैथी पर निर्भर व शरीर खोखला
माता–पिता को ईश्वर माना जाता था व पुत्र कर्तव्य निर्वाह हेतु अपने प्रति चारों ऋण (पित्रऋण, मातृऋण, देवऋण व गुरुऋण) के प्रति सजग थे एवं विभिन्न धर्म–कर्म द्वारा उनका पालन करते थे।	माता–पिता केवल गार्जियन, पुत्र अपने कर्तव्य व धर्म के प्रति विमुख, माता पिता की सेवा शून्यता की ओर, old age home में वृद्ध माता पिता को छोड़कर अपने कर्तव्य का पालन समझना।
गुरु का स्थान, शब्द व शिक्षा स्वयं ईश्वर तुल्य मानी जाती थी – शिष्यों द्वारा।	शिष्य गुरु के आधीन नहीं व आज गुरु हास्य के पात्र।
युवा पीढ़ी में संयम व संतोष, सकारात्मक सोच	युवा पीढ़ी Life style disease से ग्रसित, जिसके लिए psychiatrist का भी सहारा लिया जा रहा है, जितना है वह कम है। नकारात्मक सोच
संस्कृत भाषा, मातृभाषा में गौरव	संस्कृत भाषा विलुप्त, मातृभाषा में हीनता का भाव, भारत सबसे बड़ा अंग्रेजी बोलने वाला देश, अंग्रेजी शिक्षा से ही नौकरी
ब्राह्मण वेदवेता – आत्मज्ञान युक्त जीविका हेतु ज्ञान नहीं अपितु समाज कल्याण हेतु ही प्रदान करते थे, ब्राह्मण धर्म निष्ठ थे।	ब्राह्मण आत्मज्ञान रहित हो गए, आदर महत्व समाप्त, आजीविका रहित, परिवार पोषण हेतु ब्राह्मण धर्म निष्ठ नहीं रहे।

गौ– प्रत्येक घर का अभिन्न अंग, उसके पदार्थ से शारीरिक व मानसिक बल में वृद्धि। जो गाय दूध नहीं देती थी उसकी भी माँ की तरह सेवा होती थी।	स्वतंत्रता से अब तक 50 करोड़ गाय काटी गई, आज वह कूड़ा खाती है विदेशों में उन्हें मांसाहार तक कराया जाता है। गाय जब तक दूध देती थी तभी तक उसे रखा जाता है, अन्यथा भटकने व कटने के लिए छोड़ दिया जाता है।
सुपात्र को दान देने का धर्म था।	दान मात्र नाम प्रसिद्धि व वर्चस्व स्थापित हेतु रह गया है।
तुलसा को माता, पीपल को देव वृक्ष व गंगा, यमुना नर्मदा आदि को तीर्थ माना जाता था।	तुलसा को पौधा, पीपल को वृक्ष व गंगा, यमुना नर्मदा आदि को सिर्फ नदी माना जाता है।
ठोस पारिवारिक मूल्य – संयुक्त परिवार प्रणाली के कारण एकता, प्रत्येक परिवार में यज्ञ–हवन, देव पूजा, अतिथि सत्कार, श्राद्ध तर्पण होते थे (स्वाध्याय, वषट्कार, स्वधा व स्वाध्याय की ध्वनि गूंजती थी) विवाह को धर्म माना जाता था, गर्भपात महापाप माना जाता था।	संयुक्त परिवार प्रणाली समाप्त। परिवार में यज्ञ–हवन मात्र विवाह आदि तक ही सीमित, अतिथि देव नहीं मुसीबत का आना, देव पूजा यदा–कदा, तथा श्राद्ध तर्पण, impractical कह कर तज दिए गए हैं। (स्वाध्याय, वषट्कार, स्वधा व स्वाहा के स्वर कहीं सुनाई नहीं देता) विवाह को धर्म नहीं मात्र सामाजिक रीति व मजाक माना जाता है, Live in relation ज्यादा सहज, गर्भपात आम बात।
तिथि ज्ञान, ऋतु ज्ञान, पर्व ज्ञान, शुचि व अशुचि का ज्ञान, जीवन के अंग	पश्चिमी New Year सभ्यता व अंग्रेजी कलेंडर का ज्ञान ही रह गया है।
सोने की चिड़िया भारत	बिना पर की चिड़िया भारत
महानतम संस्कृति	क्या यह संस्कृति अपनी रही?

क्या कुछ हो रहा है क्या कुछ हो गया, पर आप मौन हैं, क्यों? अपनी संस्कृति को नष्ट होते देख आप हैं

मौन?

कर्मभूमि भारत को भोग भूमि बनते देख आप हैं

मौन?

आपके अपने स्वयं के बच्चें व युवा पीढ़ी दिशाहीन हो गई है पर आप क्यों हैं

मौन?

निर्णय आपका है कि क्या अब वह समय नहीं आ गया है जब इस सबको पुनः मर्यादित, ठीक करनेवाली महाशक्ति एकमात्र शक्ति, एकमात्र विकल्प का आह्वान, प्रार्थना, पुकार, साधना हो।

क्या आपको लगता है कि जिस कार्य हेतु आपने इस कर्मलोक, कर्मभूमि, देवभूमि, यज्ञभूमि, तपोभूमि भारत में जन्म लिया था, जिस कार्य हेतु आए थे उसको पूरा किया?